Dr. Savita Rajan

(Assistant Professor Sociology)

B.A. (1st Semester)

Topic- Caste

(Introduction to sociology)

Indira Gandhi Government College
Bangarmau Unnao

भारतीय समाज की आधारभूत संस्थाएँ – जाति

(Basic Institution of Indian Society: Caste)

जाति हिंदू सामाजिक संरचना का मूल्य आधार रहा है जिससे हिंदुओं का सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक जीवन प्रभावित होता रहा है। ऐसा कहा जाता है कि भारत की हर एक जाति प्रभावित हुई है।

जाति का अर्थ तथा परिभाषा

(Meaning and Definition of Caste)

'जाति' शब्द अंग्रेजी भाषा के caste का हिंदी रूपांतर है। अंग्रेजी के caste शब्द की उत्पत्ति पुर्तगाली भाषा के 'casta' से हुई है, जिसका अर्थ 'जाति' से लिया जाता है। जाति शब्द की उत्पत्ति का पता पुर्तगाली-ज्ञानी डी-ओरिएंटा (Gresia-डी-Orieta) नामक विद्वान ने लगाया था (1965)।

मजूमदार एवं मदान (Majumdar & Madan) के अनुसार: जाति एक बंद वर्ग है।

चार्ल्स कूले (Charles Cooley) के अनुसार: जब वर्ग वंशानुगत (अनुवंशिकता पर आधारित) होता है तो उसे जाति कहते हैं।

जाति एक ऐसा सामाजिक समूह है जिसकी सदस्यता जन्म पर आधारित है और जो अपने सदस्यों पर खान-पान, विवाह, पेशा तथा यौन संबंधों पर प्रतिबंध लगाती है।

जाति व्यवस्था की उत्पत्ति (Origin of Caste System)

जाति सदैव परिवर्तनशील संस्था रही है। इसकी उत्पत्ति के विषय में प्राचीन काल से ही भेद रहा है। जाति की उत्पत्ति के सटीक कारणों के विषय में विभिन्न मत हैं। जाति की उत्पत्ति के मुख्य सिद्धांत निम्नलिखित हैं:

1- पारंपरागत सिद्धांत (Traditional Theory)- इसके अनुसार ब्राह्मणों का जन्म ब्रह्मा के मुख से, क्षत्रियों का भुजाओं से, वैश्यों का पेट (उदर) से तथा शूद्रों का पैरों से हुआ है। यह सिद्धांत वर्णों की उत्पत्ति के संदर्भ में दिया गया है।

2- प्रजातीय सिद्धांत (Racial Theory)- इस सिद्धांत के समर्थक घूरिये, रिजले , मजूमदार , राय आदि हैं। आर्य फारस (मध्य एशिया) से आए थे। उन्होंने भारत के मूल निवासियों (द्रविड़ों) को दास बनाया या पराजित किया। आर्य अपने साथ स्त्रियों को नहीं लाए थे। इस कारण आर्यों ने यहाँ की मूल स्थानीय स्त्रियों से विवाह किया। ऐसे विवाहों से उत्पन्न संतानों को वर्णसंकर माना गया। इन्हीं समूहों से जाति की उत्पत्ति हुई।

3- धार्मिक सिद्धांत (Religious Theory)- इस सिद्धांत के समर्थक होकार्ट तथा सेनार्ट प्रमुख हैं। प्राचीन काल में कर्मकांडों को करने वाले विभिन्न समूह थे। जैसे ब्राह्मण वेदों का उच्चारण करते थे, अन्य लोग उनकी सहायता करते थे। इन विभिन्न समूहों की सामाजिक स्थिति उनके कार्यों की पवित्रता के अनुसार ऊँची अथवा निम्न थी। इस प्रकार इनकी धार्मिक क्रियाओं ने ही जाति को जन्म दिया।

4. व्यवसायिक सिद्धांत (Occupational Theory)

इस सिद्धांत के समर्थक नेसफील्ड (Nesfield) हैं। उनके अनुसार व्यवसाय और केवल व्यवसाय ही जाति-प्रथा के लिए उत्तरदायी है। जिन व्यवसायों को समाज में ऊँचा तथा पवित्र माना जाता है, उन्हें अपनाने वाली जाति भी समाज में ऊँची मानी जाती है।

5. ब्राह्मणों की चतुरयुक्ति का सिद्धांत / राजनीतिक सिद्धांत

(Theory of Clever Device of Brahminism or Political Theory)- इस सिद्धांत के समर्थक घूरिये तथा अब्बे डुब्बाय प्रमुख हैं। ब्राह्मणों ने अपने को श्रेष्ठ बनाये रखने के लिए जाति-प्रथा को जन्म दिया। भारतीय संस्कृति में ब्राह्मणों का प्रमुख स्थान था।

6. माना का सिद्धांत अथवा आदिम संस्कृति का सिद्धांत

(Theory of Mana or Primitive Culture Theory)

इस सिद्धांत के समर्थक हट्टन (Hutton) थे। माना एक रहस्यमय आध्यात्मिक शक्ति है जो प्रत्येक व्यक्ति एवं वस्तु में अलग अलग पाई जाती है | 'माना' में विश्वास करने वाले अंतर्विवाह, खान-पान तथा सहवास संबंधी नियमों को मानते हैं। इन नियमों का पालन करने के लिए उच्च और निम्न का भेदभाव उत्पन्न हुआ जिसने जाति को जन्म दिया।

7. बहुकारक सिद्धांत (Multi-Factor Theory)

जाति-प्रथा के विकास में एक ही कारक नहीं बल्कि बहुकारक सिद्धांत पाए जाते हैं।

जिसमें धर्म, प्रजाति, राजनीतिक, भौगोलिक, व्यवसाय, रक्त की शुद्धता तथा कर्मकाण्ड आदि शामिल हैं।

जाति प्रथा की विशेषताएँ

(Characteristics of Caste System)

1- संस्तरण (Hierarchy)- संस्तरण की व्यवस्था में ब्राह्मणों को सबसे ऊँचा स्थान प्राप्त है। क्षत्रियों को उनसे नीचे तथा वैश्यों को क्षत्रियों से नीचे तथा शूद्रों को सबसे नीचे का स्थान प्राप्त है।

2- खंडात्मक विभाजन (Segmental Division)- जाति के द्वारा ही भारतीय समाज खंडों में बँटा हुआ है। इसका अर्थ है कि जाति के सदस्यों में ' हम की भावना ' पाई जाती है। प्रत्येक जाति के कुछ नियम, कानून होते हैं। इनका उल्लंघन करने पर (दंड) या निष्कासन किया जाता है।

3- भोजन पर प्रतिबंध (Restriction on food)- प्रत्येक जाति अन्य जातियों के यहाँ भोजन पर प्रतिबंध लगाती है। उच्च जातियाँ निम्न जातियों के हाथ का भोजन ग्रहण नहीं करतीं।

4- विवाह तथा सहवास पर प्रतिबंध (Restriction on Marriage or Cohabitation)- प्रत्येक जाति अपनी जाति अथवा उपजाति में ही विवाह तथा सहवास की आज्ञा देती है। अपनी जाति से बाहर विवाह करने पर जाति से बहिष्कृत (exclusion) भी कर दिया जाता है।

5- जन्मजात सदस्यता (Innate membership)- व्यक्ति जिस जाति में जन्म लेता है, उसी का सदस्य मृत्यु तक बना रहता है। जाति कभी भी परिवर्तित नहीं होती।

6- व्यवसाय (Occupation)- प्रत्येक जाति का अपना परंपरागत व्यवसाय होता है। उसी जाति के लोग उसी व्यवसाय को करते हैं।

7- धार्मिक बंधन (Religious bond)- समाज में निम्न जातियों को बहुत से धार्मिक कार्यों की मनाही है — मंदिरों से प्रवेश, वेदों का पाठ, सार्वजनिक सभाओं में स्वयं कुछ का प्रयोग |

8- जाति का राजनीतिक रूप- वर्तमान समय से जाति पर आधारित पार्टियाँ बनी हुई हैं। जाति पर निर्मित पार्टियाँ हैं। जाति पर निर्मित पार्टियों में वंशानुगत सदस्यता भी प्राप्त होती है।

जाति व्यवस्था में परिवर्तन लाने वाले कारक

(Factors responsible for changes in caste system)

- औद्योगीकरण
- नगरीकरण
- शिक्षा
- धार्मिक आंदोलन
- यातायात के साधन
- जन्म के स्थान पर व्यक्तिगत गुणों का महत्व
- संयुक्त परिवार का विघटन
- कानूनी प्रभाव / कानूनों का प्रभाव

1955 अस्पृश्यता उन्मूलन अधिनियम

अनुच्छेद-15 के अनुसार धर्म, जाति के आधार पर भेद-भाव नहीं किया जाएगा।

(नोट: यह अधिनियम अस्पृश्यता को समाप्त करने और जाति आधारित भेदभाव को रोकने के लिए महत्वपूर्ण है।)